प्रश्न → हिन्दी काव्य में प्रगतिवाद शीर्षक पर निबंध लिखिए?

अथवा → प्रगतिवाद की परिभाषा, प्रगतिवाद के मूल तत्व, प्रगतिवाद की मुख्य प्रवृत्तियाँ, प्रगतिवाद का विरोध, आक्षेप?

उत्तर → हर विचारधारा अपने आप में स्वतंत्र रूप से क्रमशः विकसित होती हुई आगे बढ़ती है। सामयिक परिस्थितियाँ युग के माँग के अनुरूप उसका स्वरूप निश्चित करते हुए उसे निरंतर आगे बढ़ाती रहती है। वैसे ही हिन्दी में प्रगतिवाद नाम का प्रयोग एक विशेष विचार धारा के लिए किया जाता है। जो छायावाद के व्यक्तिगत कुंठित कोरा, का ह्रास और विरोध करता हुआ उभर आता है।

उद्भव और विकास →

इस समय छायावाद अपने व्यक्ति की साधना में तन्मय जगत की वास्तविकता की ओर आँख बन्द किए आत्म विभोर होकर आगे बढ़ा जा रहा था। इसी समय जगत की अग्नि वास्तविकता "रोटी का राग" और "क्रांति की आग" लिए प्रगतिवाद आया और उसने झकझोर कर साहित्य को एक नवीन चेतना का आलोक दिखाया। इसने छायावादी अति सूक्ष्म काल्पनिक भावनाओं और उनकी गान भावुक भावनाओं का विरोध कर उनमें स्थूल जगत की कठोर वास्तविकता के समानुरूप ला खड़ा किया। साहित्य को यथार्थ की कठोर भूमि पर उतार दिया।

प्रगतिवाद काव्य के उद्भव

Scanned with CamScanner

उद्भव और विकास में पलायनवादी और ~~अनेक~~ अन्तरराष्ट्रीय प्रवृत्तियाँ सहायक थीं। साथ ही छायावाद के रहस्यात्मक प्रवृत्तियाँ विरोधात्मक प्रतिक्रियास्वरूप भी इसका उदय हुआ। उस समय अंग्रेजों का शासन था। भारत की सारी पूँजी विलायत जा रही थी।

सामाजिक क्षेत्र में कृषकों तथा श्रमिकों के वर्ग तो बने हुए थे। पूँजीपति और मालिक के विरोध से कहीं ज्यादा असंतोषजनी स्थिति थी। शोषण करनेवाली अंग्रेजी सत्ता की प्रवृत्ति अंग्रेजों के उन अत्याचारों के बावजूद भी गाँधी जी ने हिंसा के भय से बार-बार जनता के आंदोलन को रोक दिया। उकताता हुआ जनजीवन इसे सहज भाव से स्वीकार नहीं कर पाता था। अतः इस प्रक्रिया का होना स्वाभाविक था।

राजनीतिक दासता के देश में एक ओर पूँजीवादी और सामंतवादी शोषक शक्तियों को प्रश्रय दे रही थी दूसरी ओर जनसामान्य के लिए अपार अपमानजनक गरीबी अशिक्षा, असुविधा और अपमान की।

इसके अतिरिक्त अकाल और युद्ध की विभीषिका विलिपकाएं देश को खा रही थी। द्वितीय महायुद्ध और बंगाल का अकाल देश को निगलने वाली भीषण घटनाएं भी युद्ध के दबाव में जनता और भी आतंकित हो रही थी।

प्रगतिवाद रचना और आलोचना के क्षेत्र में सर्वथा नवीन दृष्टिकोण लेकर आया। यह सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति को ही रचना का उद्देश्य मानता है।

प्रगतिवादी साहित्य की विचार धारा।

मार्क्स की विचारधारा है। यह विचारधारा तीन रूपों में हमारे सम्मुख आती है।

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद मूल्य वृद्धि का सिद्धांत एवं मूल्य सम्पन्नता के विकास की सम्भावना।

मार्क्स के अनुसार इस जगत की उत्पत्ति एवं उन्नति द्वन्द्व से हुई है। दो वस्तुओं के द्वन्द्व से तीसरी वस्तु की उत्पत्ति होती है और यह क्रम चलता चला जाता है। उनके अनुसार यह भौतिक जगत द्वन्द्व या संघर्ष से अपना विकास स्वयं करता है। मूल्य वृद्धि के सिद्धांत के रूप में मार्क्स मूल पदार्थ स्थूल साधन श्रमिक का श्रम और मूल वृद्धि इन चार अंगों को स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार पूंजीपति मूल पदार्थ और स्थूल साधन मशीनें आदि एकत्र करता है और वह निजी व्यय करता है। श्रमिक अपने श्रम द्वारा वस्तु उत्पादन करता है। किन्तु पूंजीपति श्रमिक के श्रम का शोषण कर धन लिप्सा को तृप्त करता है। मार्क्स की इन विचारधाराओं से प्रगतिवाद अत्यंत प्रभावित है।

प्रगतिवाद का समय अत्यल्प है। अर्थात हिन्दी साहित्य की इस धारा ने केवल सात वर्ष के लिए (1936–42) बल पकड़ा। ~~मिल~~ निराला, पंत, केदारनाथ, अग्रवाल, राम विलास शर्मा, नागार्जुन, शिवमंगल सिंह सुमन, त्रिलोचन, मुक्तिबोध, अंचल, नरेन्द्र शर्मा, ~~राम~~ रांगेय राघव, भवानी प्रसाद मिश्र, चन्द्रकुंवर बर्त्वाल, गोरे प्रसाद गुप्त आदि कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से मानवादी (प्रगतिवाद) विचारधारा को

अभिव्यक्ति की। प्रगतिवादी के तत्कालीन कवियों और लेखकों में शम्भु नाथ सिंह रसिक, विद्यापति कोकिल, गिरीजा कुमार माथुर, नेमीचन्द जैन, भारत भूषण अग्रवाल, गजानन मुक्तिबोध, नीरज, त्रिलोचन, अमृत राय आदि प्रमुख हैं।

प्रगतिवाद की परिभाषा →

प्रगति का शाब्दिक अर्थ है चलना, आगे बढ़ना। अतः प्रगतिवाद का शाब्दिक अर्थ हुआ वह वाद जो आगे बढ़ने में विश्वास रखता है। इस प्रकार से इसका अर्थ बहुत व्यापक है। किन्तु आधुनिक हिन्दी में इसका प्रयोग एक विशेष विचारधारा है।

मार्क्सवादी या साम्यवादी विचारधारा के अनुकूल साहित्यिक विचारधारा → दूसरे शब्द में इस प्रकार कहा जा सकता है कि साम्यवादी विचारों का प्रचार करने वाला या साम्यवादी लक्ष्य की पूर्ति में योग देनेवाला साहित्य ही प्रगतिवादी साहित्य कहलाता है।

सुमित्रानन्दन पंत ने प्रगतिवादी की परिभाषा निर्धारित करते हुए लिखा है —

" प्रगतिवाद उपयोगितावाद का ही दूसरा नाम है। वैसे तो सभी युगों का लक्ष्य सदैव प्रगति की ओर रहा है। परन्तु आधुनिक काल की प्रगतिवादी ऐतिहासिक विषय विज्ञान के प्रयोग पर जन समूह की सामूहिक प्रगति का पक्षपाती है। सामूहिक प्रगति सामयिक नव निर्माण, जनता के नियंत्रण की कल्पना किसी दर्शन पर आधृत है और वह दर्शन है। मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद। इसी कारण आलोचकों ने कहा है कि " राजनीतिक में जो स्थान समाजवाद का

नहीं स्थान साहित्य में प्रगतिवाद का है।"

पंतजी की इस विनयक परिभाषा से एक बात स्पष्ट हुई और वह यह कि प्रगतिवाद वर्ग वैमनस्य को दूर कर श्रमिकों तथा शोषकों के विरुद्ध क्रांति का आह्वान करने वाला है।

~~श्री रामा राम रस्तोगी ने~~ —

प्रगतिवाद की पृष्ठभूमि →

यूरोप में जब औद्योगिक क्रांति हुई इसी के परिणाम स्वरूप मनुष्यों का दृष्टिकोण (विचार) पूर्णतः बदल गया। मनुष्य का अंधविश्वास मूर्तिपूजा और ईश्वर के प्रति विश्वास समाप्त हो गया। कार्ल मार्क्स ने यह प्रतिपादित किया कि विश्व किसी ईश्वर द्वारा निर्मित नहीं है। और सामाजिक विषमता प्रकृति विधान नहीं अपितु मनुष्य द्वारा निर्मित है। इसके दर्शन को द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद कहते हैं। मार्क्स के स्वप्नों ने साहित्यकारों को जगाया। छायावाद नई समस्याओं एवं परिस्थितियों के प्रति संवेदनशील नहीं हो सका। फलतः अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर "प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन" नामक एक संस्था का जन्म हुआ जिसका पहला अधिवेशन 1936 ई० के कलकत्ते ~~के आम~~ में अधिवेशन हुआ। जिसका सभापति रवीन्द्र नाथ ठाकुर थे। जोश मलीहाबादी तथा सरदार जाफ़री ने भी इस आंदोलन का साथ दिया। इसी वर्ष स्थान में प्रगतिशील ~~वर्ग~~ साहित्य का घोषणा पत्र प्रकाशित हुआ। प्रेमचन्द और रवीन्द्र साम्यवादी नहीं थे। किन्तु वे हृदय से गरीबों के समर्थक और सामंतवाद के विरोधी थे।

अतएव इन्होंने राष्ट्रीय स्तर से इस आंदोलन का साथ दिया।

1937 ई० के मार्च के विशाल भारत में प्रगतिशील शिवदान सिंह चौहान ने भारत में प्रगतिशील साहित्य की आवश्यकता शीर्षक लेख लिखा। जिसमें इन्होंने कहा —— "हमारा साहित्यिक नारा कला, कला के लिए नहीं वरन् संसार को बदलने के लिए है। इस नारे को बुलन्द करना प्रत्येक साहित्यिक का फर्ज है।"

विकासक्रम ——→ प्रगति बालकृष्ण शर्मा नवीन और दिनकर की कविताएं सन् 1932 ई० से लोकप्रिय थी। ब्रजभाषा में रामेश्वर करुण के सात सौ दोहे करुणा सतसई के नाम से प्रसिद्ध है। यह पुस्तक साम्यवाद से प्रभावित थी। और सम्पत्ति पर व्यक्ति को अधिकार देने की विरुद्ध थी। दिनकर की रेणुका का प्रकाशन 1935 ई में हुआ। 1934 ई में नरेन्द्र का शूल-फूल और 1936 में कर्णफूल प्रकाशित हुआ। भगवती चरण वर्मा का प्रेम संगीत 1937 में प्रकाशित हुआ। इन सभी रचनाओं में प्रगतिवाद के लक्षण दिखाई देते लेकिन प्रगतिवाद का दर्शन सर्वप्रथम युगवाणी में मुखरित हुआ। इस कारण युगवाणी को ही प्रगतिवाद का प्रथम श्रेय माना जाता है। कुछ आलोचक ग्राम्या को पहला प्रगतिवादी ग्रंथ मानने के पक्ष में है।

प्रगतिवाद का आरम्भ 1940 ई० से माना जाता है। 1940 से 1946 के बीच जो भी साहित्य लिखे गए हैं इसमें रूस की विजय कामना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। प्रगतिशील आंदोलन से

प्रेरित होकर साहित्य के क्षेत्र में निराला, पंत, दिनकर और सुभद्रा कुमारी चौहान आदि को इस कोटि में रखा जाता है।

कुछ वर्षों बाद हिन्दी में प्रगतिशील कविता का ही अधिक जोर रहा। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद मोह की भावना की समग्रता विशृंखलित हो गयी और प्रगतिवादी काव्य का विकास होने लगा।